हिंदी उपन्यासों में विस्थापनमूलक समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन
(सन् 1990 से 2020 तक के विशेष संदर्भ में)

हिन्दी विषय की पीएच.डी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध विषय की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थी

प्रतिभा

शोध निर्देशिका

डॉ. नमस्या

एसोसिएट. प्रोफेसर

हिन्दी विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा-282005

2022

प्रस्तावना- आधुनिक हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा का उद्भव एक महत्वपूर्ण घटना है। उपन्यास साहित्य मानव जीवन का गद्यात्मक महाकाव्य माना जाता है। आधुनिक युग में व्याप्त मानवीय पीड़ा एवं वेदना का यथार्थ निरूपण उपन्यास साहित्य में देखने को मिलता है। मानव समुदाय के उत्थान-पतन, आशा-निराशा, जय-पराजय, आकुलता-व्याकुलता, चुनौतियों एवं समस्याओं को व्यक्त करने में उपन्यास साहित्य पूर्णतः सफल रहा हैं । विस्थापन की समस्या आज के युग की सबसे गंभीर समस्या है, जिसकी अभिव्यक्ति हिंदी उपन्यासों में बेहद मार्मिक ढंग से कि गयी हैं |

विस्थापन को अंग्रेजी शब्द **'Displacement'** के पर्याय के रूप में जाना जाता है तथा **हिंदी 'शब्द कोश' में** विस्थापन का अर्थ "किसी स्थान पर बसे हुए लोगों को वहाँ से बलपूर्वक हटा देना" दिया गया हैं।

बृहत प्रमाणिक हिंदी कोश के अनुसार- "किसी स्थान पर बसे हुए लोगों को वहाँ से बलपूर्वक हटा देना"

शब्दकोश के अनुसार - "जो कहीं स्थापित या स्थित हो उसे वहाँ से हटाना या किसी स्थान पर बसे हुए लोगो को कहीं से बलपूर्वक हटाना और वह जगह उनसे खाली करा लेना ही डिस्प्लेसमेंट या विस्थापन हैं"।

रूबी एलसा जेकब - "विस्थापन मूलतः एक व्यक्ति या समूह द्वारा जोखिमों और लाभों को तोलने के बाद कम उपयुक्त वातावरण से अधिक लाभदायक स्थान की और गमन करने का परिमेय निर्णय है"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता हैं, कि जब लोग अऽपनी बनी-बनाई दुनियाँ से उजड़ जाते है या उजाड़ दिए जाते है तो उसे ही हम विस्थापन कहते हैं। विस्थापन के प्रमुख प्रकारों में स्थायी या अस्थायी विस्थापन स्वैच्छिक या बलात् विस्थापन और आंतरिक या अंतरराष्ट्रीय विस्थापन प्रमुख हैं | जीवन की प्रगति के साथ-साथ विस्थापन के मूल अर्थ में भी बदलाव आया हैं, अपनी इच्छा से भी लोग एक स्थान से विस्थापित होते है, साथ ही मज़बूरीवश या बलपूर्वक भी लोग विस्थापित हो जाते हैं। स्वेच्छा से स्थानांतरण करने वाले अपने निर्णय से खुश होते हैं और दूसरी जगह बसने में कामयाब हो जाते है, लेकिन जो लोग मजबूर होकर या बलपूर्वक अपनी ज़मीन से दूर होते है; वे लोग मानसिक रूप से टूट जाते हैं। मानव संस्कृति का इतिहास और विस्थापन दोनों साथ-साथ चलने वाली धाराएं हैं। दुनिया का पहला विस्थापन कब हुआ यह बता पाना बड़ा कठिन

काम हैं, परन्तु रोजी-रोटी की तलाश में घुमन्तु समुदाय का एक जगह से दूसरी जगह पर जाना युगों पुरानी घटना हैं, परन्तु पिछले कई वर्षो से प्राकृतिक आपदाएँ, आतंकवादी हमले, दुश्मन देश के हमले, शिक्षा की आवश्यकता, रोजगार की तलाश, सामाजिक-धार्मिक मतभेद एवं शहर या महानगरों में सरकारी एवं गैर-सरकारी योजनाओं से लाखों लोग विस्थापन का भोग बनते हैं | मानव समुदाय के विस्थापन में विकास से जुड़ी योजनाए भी केंद्र में रही हैं |

भारत के बहुचर्चित विस्थापन

(1) भारत-पाक विभाजन से उत्पन्न विस्थापन

(2) गिरमिटिया मजदूरों का विस्थापन

(3) विकास योजनाओं से होने वाला विस्थापन

(4) कश्मीरी पंडितों का विस्थापन

भारत-पाकिस्तान विभाजन से उत्पन्न विस्थापन

भारत-पाक विभाजन बीसवीं शताब्दी की सबसे बड़ी साम्प्रदायिक घटना थी। 15 अगस्त 1947 को भारत सैकड़ों साल की गुलामी की जंजीरें तोड़कर स्वतंत्र हुआ, लेकिन इस बड़े सुखद परिवर्तन के लिए विभाजन जैसी एक कीमत चुकानी पड़ी | पाकिस्तान और भारत में हुए साम्प्रदायिक दंगों में हजारों घर उजड़े, दोनों देशों में लाखों आदमी मारे गये, करोड़ों आदमियों को अपना घर, अपना देश छोड़कर भागना पड़ा और वे 'शरणार्थी' कहलाये । इस दौरान हुई आगजनी, कत्लेआम, ट्रेनों को रोक कर किए गए हत्याकांड औरतों के अपहरण और बलात्कार की समूची विभीषिका का बयान सुन कर आज भी लोग काँप उठते हैं।

विस्थापन का सिलसिला निरंतर चल रहा है- बांग्लादेश, श्रीलंका, अफगानिस्तान जैसे बहुत से स्थानों में लोग विस्थापित हो रहे हैं, और शरणार्थियों का जीवन जी रहे हैं। विस्थापन एक देश से दूसरे में ही नहीं हो रहा, लोग अपने देश में भी विस्थापित हो रहे हैं। भारत के सन्दर्भ में 1984 तथा 2002 में हुए सिख तथा गुजरात दंगों में अनेक लोग अपने मूल स्थान से विस्थापित हो गये।

भारत-पाकिस्तान विभाजन को लेकर कई उपन्यास लिखे गये, जिनमें कमलेश्वर द्वारा रचित 'कितने पाकिस्तान' यशपाल का 'झूठा-सच', भीष्म साहनी का 'तमस', नासिरा शर्मा का 'ज़िन्दा मुहावरें' द्रोणवीर कोहली का 'वाह कैम्प', प्रताप सहगल का 'अनहद नाद', हरदर्शन सहगल का 'टूटी हुई ज़मीन' आदि उपन्यासों में विभाजन से उत्पन्न समस्याओं को दिखाया गया हैं। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने भारतीय इतिहास की गहराई में जाकर निष्पक्ष और तटस्थ रूप से भारत विभाजन की समस्या का हल ढूंढने का प्रयास किया है। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास एक ऐसे समय की सच्ची कहानी हैं, जब धर्म के नाम पर हजारों हिन्दू-मुसलमानों ने ख़ून की नदियाँ बहाई थीं, एक दूसरे के घर जलाकर उन्हें घर से बेघर कर दिया था, बड़ी बेरहमी से स्त्रियों की थीं इज्ज़त आबरू के साथ खिलवाड़ किया गया था। कमलेश्वर ने इस कृति में भारत विभाजन के दौरान उत्पन्न हुई विभिन्न समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया हैं। इसी प्रकार प्रताप सहगल रचित 'अनहद नाद' उपन्यास विभाजन से उत्पन्न विस्थापन की समस्या पर आधारित कृति हैं। इस उपन्यास में विभाजन के चलते पाकिस्तान से भारत में आये शरणार्थियों की समस्या को मुख्य समस्या के रूप में उठाया गया है, हज़ारों लोगों को अपनी ज़मीन, घर-बार, खेत- खलियान आदि को छोड़कर हमेशा के लिए विस्थापित होना पड़ा, जिसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में किया गया है। उपन्यास के पात्र जगत नारायण को विभाजन के कारण अपनी भूमि को पश्चिमी पंजाब में छोड़कर भागना पड़ता है, वह भागते-भागते अपने परिवार सहित भारत में अटारी केम्प जा पहुँचता है, परन्तु वहाँ शरणार्थियों की स्थिति जानवरों से भी बेहाल थी लोग रोटी-रोटी के लिए चील कौवों की तरह एक दूसरे पर झपट रहे थे, सभी तरफ लूट मार और भ्रष्टाचार व्याप्त था। सरकार द्वारा पुनर्वास के लिए दिए जाने वाले मकान पैसों की ताकत में बिकने लगे थे। यह उपन्यास इस अमानवीय त्रासदी का दाहक दस्तावेज है।

गिरमिटिया मजदूरों का विस्थापन

विदेशों से भारत के सम्बन्धों का पुराना इतिहास रहा हैं। हजारों वर्षो से धर्म प्रचार तथा व्यापार के लिए भारतीय विभिन्न देशो में जाते रहे हैं, परंतु अंग्रेजों के शासन काल में इस दृश्य में परिवर्तन हुआ, अंग्रेज हजारों

भारतीय मजदूरों को छल-कपट से गिरमिटिया मजदूर बना कर अपने देशों में ले गये। उन्होंने गुलामी की शर्त पर लोगों को विदेश भेजना प्रारंभ किया था, इन मजदूरों को गिरमिटिया कहा गया। गिरमिट शब्द अँग्रेजी के एग्रीमेंट शब्द का अपभ्रंश बताया जाता है। कागज पर मजदूरों के अँगूठे का निशान लगवाकर हर साल हज़ारों मजदूरों को मॉरीशस, फिज़ी, सूरिनाम, गुयाना, ट्रिनीडाड, टोबेगो आदि देशों में भेजा जाता था, उसे मज़दूर और मालिक 'गिरमिट' कहते थे। गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' और अभिमन्यु अनत के 'लाल पसीना' और 'और पसीना बहता रहा' जैसे उपन्यास लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले 'गिरमिटिया मजदूरों' की दर्द भरी ज़िंदगी पर आधारित है, जिसमें भारतीय मजदूरों की विवशता है, उनका लोभ है, आकांक्षा और पतन है। अभिमन्यु अनत द्वारा रचित 'लाल पसीना' में उन भारतीय मजदूरों के जीवन-संघर्षो की कहानी हैं, जिनके ख़ून और पसीने से मॉरीशस की चट्टानें उपजाऊ मिट्टी में परिवर्तित हुई ; लेकिन उनके हिस्से रह गए केवल अपमान और प्रताड़ना। अभिमन्यु अनत अपने उपन्यास 'और पसीना बहता रहा' में लिखते हैं "मुट्ठी भर लोग हज़ारों को अपने पैरों से रौंदे, यह बात मेरी समझ में नहीं आती, ज़मीन हम जोतते है; मेहनत हमारी होती है, खून पसीना हमारा बहता है और उपज की सारी फसल किसी और की हो जाये ? यहां तो मजदूर के पसीने की कीमत कुएं के पानी से भी सस्ती है" इस प्रकार गिरमिटिया मजदूरों पर हुए शोषण, अत्याचारों को हिंदी के उपन्यासों में उठाया गया है |

विकास योजनाओं से होने वाला विस्थापन

स्वतंत्रता के बाद सरकार द्वारा विकास के नाम पर बहुत सारी परियोजनाएँ अमल में लायी गयी, जिससे कि देश के लोगों को आशा की किरण नजर आने लगी कि उनकी दशा और दिशा सुधरेगी। उनकी गरीबी और बेरोजगारी दूर होगी लेकिन लोगों की अपेक्षाओं पर पानी फिर जाता हैं, भारत में विकास की परियोजनाओं से जो लोग विस्थापित हुए, उन परियोजनाओं में उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के बेतवा नदी के राजघाट पर बने बांध, हीराकुंड (उड़ीसा), नागार्जुन सागर (आंध्रप्रदेश), भाखड़ा नांगल (हिमाचल प्रदेश) और दामोदर घाटी (झारखंड) मुख्य है भाखड़ा नांगल डैम बनने के बाद वहाँ से उखड़े लोगों का आज तक समुचित पुनर्वास नहीं हो पाया है। बाँध परियोजना गाँव के किसान और आदिवासी समाज के लिए विस्थापन की दर्दनाक त्रासदी भी लेकर आयी। वीरेंद्र जैन ने इस

कड़वे सच के दर्शन हमें अपने उपन्यास 'डूब' और 'पार' उपन्यास में करवायें है। भारत के आदिवासियों की जीविका और संस्कृति उनके जंगलों से जुड़ी है, लेकिन उन्हें जंगलों से वन नाशक, अवैध शिकारी और अविवेकी कह कर खदेड़ दिया गया। इस तरह आदिवासियों के लिए जंगल प्रतिबंधित हो गए, वहाँ जाना ग़ैरकानूनी हो गया। सदियों से जंगलों के हक़दार बने आदिवासी वन कानूनों के कारण अपने मूल से कट गए, विस्थापित हो गए। पिछले पाँच दशकों में राजनीतिक स्वार्थपरक नीतियों के कारण विभिन्न विकास योजनाओं से लाखों लोग विस्थापित हुए। 1981 में रामगुंडम में नेशनल थर्मल पॉवर कॉर्पोरेशन (एन टी पी सी) के कारण विस्थापित लोगों के पुनर्वास की कागज़ी कार्यवाही सोलह साल तक चलती रही। सरकार व ग़ैरकानूनी संगठनों द्वारा चलायी जा रही प्रत्येक आदिवासी कल्याण योजना उन्हें पूरी तरह राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल करा देने में असमर्थ रही है इसलिए आदिवासी समुदाय भारतीय नागरिक के रूप में अपने अधिकारों से वंचित रहते हैं। ये लोग अपने मूल स्थानों से विस्थापित होते हैं और नये स्थानों में शारीरिक व मानसिक रूप में असफल होकर जीने को विवश हो जाते हैं।

आदिवासियों के विस्थापन को लेकर हिंदी में कई उपन्यास लिखे गये हैं जिनमें 'डूब', 'पार', 'विस्थापित', 'अल्मा कबूतरी', 'पाँव तले की दूब', 'ग्लोबल गाँव का देवता' आदि उपन्यासों में आदिवासियों की विस्थापन से होने वाली समस्याओं को केंद्र में रखा गया है संजीव द्वारा रचित उपन्यास 'पाँव तले की दूब' में झारखंड में हो रहे विकास से उत्पन्न विस्थापन पर आधारित एक महत्वपूर्ण रचना हैं। इसी प्रकार मैत्रेयी पुष्पा द्वारा रचित 'अल्मा कबूतरी' बुंदेल खंड क्षेत्र के कबूतरा जनजाति के जीवन की समस्याओं को उजागर करती हैं कबूतरा जनजाति आज भी अपराधवृत्ति से अपना जीवन निर्वाह करती है फलतः आज का सभ्य समाज उसे हमेशा अपराधी की तरह देखता है कबूतरा जनजाति का पुरुष या तो जंगल में रहता है या जेल में, उनकी स्त्रियों का यौन शोषण किया जाता है। उपन्यास की मुख्य पात्र कदम बाई अपने बेटे के बारे में कहती है कि- "उसका दारू बेचना, चोरी करना, बार-बार जेल जाना, हमारी बिरादरी का कारोबार यही है। इसमें बुरा क्या है ?" सभ्य समाज ने हर बार कबूतरा जाति के साथ अन्याय किया है, जिस वजह से उन्हें अपने संस्कारों से मजबूरन विस्थापित होकर अपराधी बनना पड़ता है।

कश्मीरी पंडितों का विस्थापन

भारत और पाकिस्तान के विभाजन से ही कश्मीर विवाद का विषय रहा है। आज भी यह विषय गंभीर तनाव का विषय है। 19 जनवरी 1990 की शाम कश्मीरी पंडितों के लिए किसी ख़ौफनाक हक़ीकत से कम नहीं थी, जिसे वह कभी भी याद नहीं करना चाहते, लेकिन अपनी ज़मीन को खोने का दर्द उन्हें रह-रह कर सताता है। जब भी वह उस शाम को याद करते है जब उन्हें अपनी पुश्तैनी ज़मीन को छोड़कर जाने के लिए कह दिया गया था, तो उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। 1990 में घाटी में कश्मीरी पंडितों पर खूब अत्याचार हुए थे। जो लोग अपनी ज़मीन छोड़कर नहीं गए, उन्हें आतंकियों ने मार दिया। उस दौरान बलात्कार, लूटपाट और हत्या की दर्जनों वारदातें सामने आयीं। कश्मीरी पंडित हर साल (19जनवरी) के दिन को 'विस्थापन दिवस' के रूप में मनाते हैं वह हमेशा से मांग करते आये हैं कि सरकार उन्हें घाटी में फिर से बसने के लिए योजना लायी जाए।

केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर के विशेष राज्य का दर्ज़ा समाप्त कर सूबे को दो केंद्र शासित प्रदेश में विभाजित कर दिया हैं, अनुच्छेद 370 ख़त्म होने के बाद कश्मीरी पंडितों के भीतर एक आस जगी है और उन्होंने सरकार से अपने पुनर्वास की मांग की है हिंदी उपन्यासों में कश्मीर की भीषण त्रासदी को सहज एवं स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया गया है। कश्मीर में हुए विस्थापन को लेकर कई उपन्यास लिखे गए हैं, जिनमें से मनीषा कुलश्रेष्ठ का 'शिगाफ़', 'चंद्रकांता' द्वारा लिखा गया उपन्यास 'कथा सतीसर' संजना कौल का 'पाषाण युग', जयश्री रॉय का 'इक़बाल', क्षमा कौल का 'दर्दपुर', रवीन्द्र प्रभात का 'कश्मीर 370 किलोमीटर' भी शामिल हैं जो कश्मीर की विभिन्न समस्याओं को कथा के केंद्र में रख वहाँ के निवासियों, पलायन कर गए कश्मीरी पंडितों के दर्द को बहुत सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है। 'कथा सतीसर' उपन्यास में निर्वासन का दंश झेलते कश्मीरियों का दर्द बयां है, अपने ही भाइयों द्वारा अपने ही घर से निष्कासन का दर्द क्या होता है, यह शायद आप महसूस कर सकें। चन्द्रकांता ने कश्मीर घाटी में छाए आतंकवाद के काले बादलों के प्रति अपनी चिंता और दुःख को प्रकट किया है, इसके जरिये न केवल आतंकवाद से से जर्जर होती वादी का दुख प्रकट हुआ है, बल्कि कश्मीर घाटी से

निष्कासित कश्मीरी पंडितों की व्यथा कथा भी कही गयी हैं, जो वर्षो से शरणार्थियों की उपेक्षापूर्ण निराशा से भरी ज़िन्दगी जी रहे हैं।

विषय चयन की प्रेरणा -

शोधार्थी का शुरुआत से ही कथा साहित्य से लगाव रहा है। जब शोधार्थी को पीएच.डी करने का सुअवसर प्राप्त हुआ, तो शोधार्थी ने हिंदी उपन्यास साहित्य पर काम करने का निर्णय किया। शोधार्थी ने देखा कि हिंदी उपन्यासों में विस्थापन की समस्या को लेकर शोध कार्य बहुत कम मात्रा में हुआ है। हिंदी साहित्य में साम्प्रदायिक वैमनस्य, देश विभाजन के बारे में काफी कुछ लिखा गया है, परन्तु उसकी तुलना में विस्थापन पर लोगों का ध्यान कम गया है। जब शोधार्थी ने यह बात अपने शोध निर्देशक डॉ. नमस्या के सामने रखी, तो उन्होंने शोधार्थी को "हिंदी उपन्यासों में विस्थापनमूलक समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन" विषय पर शोध करने का सुझाव दिया। शोधार्थी को आज के समय में विस्थापन जैसी गंभीर समस्या पर कार्य करना उचित लगा। इसलिए शोधार्थी ने अपने शोध विषय के रूप में "हिंदी उपन्यासों में विस्थापनमूलक समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन" का चयन किया।

शोध विषय का उद्देश्य एवं महत्त्व -

प्रस्तुत शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य विस्थापन के विविध आयामों, विस्थापन के नाम पर हो रहे शोषण एवं विस्थापन से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं से लोगों को अवगत कराना है, साथ ही यह भी उजागर करना है कि विस्थापन के चलते मानव समुदाय किस प्रकार के बिखराव को अपने जीवन में जीने के लिए विवश होता है। यह शोध कार्य पूर्ण रूप से मौलिक होगा। इस शोध के माध्यम से अन्य शोधार्थियों को नवीन और मौलिक जानकारी प्राप्त होगी। शोध कार्य बिना किसी पूर्वाग्रह के समस्त तथ्यों के संकलन के उपरांत मौलिक एवं नवीन रूप से संपन्न किया जायेगा।

शोध विषय पर हुए पूर्ववर्ती शोध कार्य एवं शोध की मौलिकता -

शोध कार्य हेतु **'हिंदी उपन्यासों में विस्थापनमूलक समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन'** पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। विस्थापन को लेकर जिस भी विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्य हुआ है। वह मेरे शोध कार्य के विषय से भिन्न है। मेरे शोध कार्य से पूर्व हिंदी में विस्थापन को लेकर जो भी शोध कार्य हुआ है। उसकी सूची नीचे दी जा रही है -

(1) समकालीन हिंदी उपन्यासों में विस्थापितों का यथार्थ, रूबी एलसा जेकब, कोच्चि यूनिवर्सिटी ऑफ़ साइंस एन्ड टेक्नोलॉजी, 2010

(2) हिंदी उपन्यासों में विस्थापन की त्रासदी, विपुल पटेल, गुजरात यूनिवर्सिटी, 2019

उपर्युक्त शोध कार्य में हिंदी में विस्थापन को लेकर जो भी शोध कार्य हुआ है, वह मेरे शोध कार्य के विषय से भिन्नता लिए हुए हैं शोधार्थी ने अपने शोध विषय में जिन आधार ग्रंथों को लिया है वह पूर्ववर्ती शोध कार्य से भिन्न है, साथ ही शोधार्थी ने अपने शोध विषय में नवीनतम रचनाओं को सम्मिलित किया हैं, जो शोध को नवीन दृष्टि प्रदान करेगा। शोधार्थी ने इस शोध विषय में उन सामाजिक मुद्दों को उठाया हैं, जो आज के वर्तमान समय में बेहद प्रासंगिकता लिए हुए है। शोधार्थी द्वारा किया गया शोध कार्य आगामी समय में उपयोगी एवं पूर्णतः मौलिक सिद्ध हो ऐसा मेरा प्रयास रहेगा।

शोध विषय की आवश्यकता -

विस्थापन आज के युग की ज्वलंत समस्या है, इसलिए इस विषय पर शोध कार्य करना आवश्यक है, विस्थापन के कारण विभिन्न देशों के समक्ष शरणार्थियों की समस्या एक गंभीर चुनौती बनती जा रही है। इसलिए भी ऐसे विषयों पर शोध कार्य करना ज़रूरी हो जाता हैं।

साहित्य सर्वेक्षण -

शोध विषय से संबंधित जानकारी विभिन्न विश्वविद्यालयो के पुस्तकालयों से प्राप्त की गई है -

(1) डी.ई.आई दयालबाग़ विश्वविद्यालय, आगरा

(2) केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(3) आगरा विश्वविद्यालय, आगरा

(4) दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

(5) जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली

(6) जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

शोध प्रविधि -

प्रस्तावित शोध को करते समय शोध की मौलिकता के साथ शोध की प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए, विभिन्न संदर्भ ग्रन्थों को देखते हुए समीक्षात्मक, विवेचनात्मक, विचारात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा, इसके अतिरिक्त विषय से सम्बंधित लेखकों से विचार विमर्श के साथ साक्षात्कार और प्रश्नावली शोध प्रविधि का प्रयोग करते हुए शोध विषय एवं शोध कार्य को सार्थक बनाने का प्रयास किया जायेगा। सन्दर्भ ग्रन्थ, आधार ग्रन्थ, शब्द कोश, विश्व कोश के प्रयोग द्वारा शोध कार्य की तथ्यपरक सामग्री को एकत्रित किया जाएगा।

संभावित अध्याय

प्रथम अध्याय- विस्थापन की अवधारणा

1.1 विस्थापन शब्द की व्युत्पत्ति अर्थ एवं उसका स्वरूप

1.2 विस्थापन शब्द की परिभाषा

1.3 विस्थापन के विविध रूप

1.4 विस्थापन का ऐतिहासिक संदर्भ

1.5 विस्थापन के विविध कारण (सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक)

दूसरा अध्याय- हिंदी उपन्यासों में गिरमिटिया मजदूरों का विस्थापन

(पहला गिरमिटिया, और पसीना बहता रहा के विशेष संदर्भ में)

2.1 गिरमिटिया मजदूरों का इतिहास

2.2 गिरमिटिया मजदूरों की समस्याएं

2.3 नस्लवाद एवं रंगभेद का शिकार बने भारतीय प्रवासी

तीसरा अध्याय- हिंदी उपन्यासों में भारत विभाजन से उत्पन्न विस्थापन

(कितने पाकिस्तान, अनहद नाद, टूटी हुई ज़मीन, वाह कैम्प, ज़िन्दा मुहावरें के विशेष सन्दर्भ में)

3.1 भारत विभाजन की पृष्ठ्भूमि

3.2 हिंदी उपन्यास में विभाजन की त्रासदी

3.3 भारत विभाजन और तत्कालीन नारी की समस्या

3.4 स्वतंत्र भारत में विस्थापित शरणार्थियों की समस्याएं

चौथा अध्याय - हिंदी उपन्यास में विकास योजनाओं से उत्पन्न विस्थापन

(डूब, पार, ग्लोबल ग्लोबल गाँव का देवता, अलमा कबूतरी, पाँव तले की दूब उपन्यासों के विशेष संदर्भ में)

4.1 जंगल क्षेत्रों में विकास परियोजनाएं एवं विस्थापन

4.2 जंगल की भूमि पर अवैध अधिकार

4.3 आदिवासी समाज में विस्थापन

4.4 विस्थापन के प्रतिरोधी स्वर

4.5 विस्थापन के कारण अस्मिता एवं अस्तित्व के प्रश्नों का उदय

पाँचवा अध्याय : हिंदी उपन्यास और कश्मीरी विस्थापन

(कथा सतीसर, पाषाण युग, दर्दपुर, शिगाफ़, इक़बाल, कश्मीर 370 किलोमीटर के विशेष संदर्भ में)

5.1 कश्मीरी विस्थापन के कारण

5.1.1 सामाजिक कारण

5.1.2 राजनैतिक कारण

5.1.3 धार्मिक कारण

5.2 कश्मीरी पंडितों के विस्थापन की समस्या

5.3 कश्मीरी अस्मिता के लिए संघर्ष

5.4 शरणार्थी शिविरों की न्यूनतम सुविधाएँ

5.5 कश्मीरी विस्थापन और स्त्री

छठा अध्याय : विस्थापन पर आधारित उपन्यासों की भाषायी संवेदना का विश्लेषण

6.1 भाषा-शैली

6.2 बिम्ब

6.3 प्रतीक

उपसंहार -

(1) साक्षात्कार

(2) आधार ग्रंथ

(3) संदर्भ ग्रंथ

(4) शब्दकोश

(5) विश्वकोश

(6) पत्र-पत्रिका

(7) प्रश्नावली

(8) वेबसाइट

नोट - शोध निर्देशक के सुझाव से अध्याय एवं शोध कार्य में 20 प्रतिशत परिवर्तन संभव है।

आधार ग्रंथ

(1) जैन, वीरेंद्र, डूब, वाणी प्रकाशन, नई-दिल्ली, 1991

(2) जैन, वीरेंद्र, पार, वाणी प्रकाशन, नई-दिल्ली, 1994

(3) अनत, अभिमन्यु, और पसीना बहता रहा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993

(4) शर्मा, नासिरा, ज़िन्दा मुहावरें, वाणी प्रकाशन, नई-दिल्ली 1993

(5) संजीव, पाँव तले की दूब, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1995

(6) सहगल, प्रताप, अनहद नाद, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 1995

(7) सहगल, हरदर्शन, टूटी हुई जमीन, विक्रम प्रकाशन, दिल्ली, 1996

(8) कोहली, द्रोणवीर, वाह कैम्प, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 1998

(9) किशोर, गिरिराज, पहला गिरमिटिया, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली,1999

(10) कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 2000

(11) पुष्पा, मैत्रेयी, अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000

(12) चंद्रकांता, कथा सतीसर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000

(13) कौल, संजना, पाषाण युग, आधार प्रकाशन, हरियाणा, 2003

(14) कौल, क्षमा, दर्दपुर, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2004

(15) रणेन्द्र, ग्लोबल गाँव का देवता, , भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2009

(16) कुलश्रेष्ठ, मनीषा, शिगाफ़, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012

(17) रॉय, जयश्री, इक़बाल, आधार प्रकाशन, हरियाणा, 2014

(18) प्रभात, रवीन्द्र, कश्मीर 370 किलोमीटर, नेशन प्रेस, 2020

सहायक ग्रंथ -

(1) गुप्ता, रमणिका, आदिवासी साहित्य और समाज, सामयिक पेपरबैक्स, संस्करण 2016

(2) गुप्ता, रमणिका, आदिवासी: विकास से विस्थापन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, 2015

(3) आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2002

(4) यादव, राजेंद्र, उपन्यास: स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण :1997

(5) पांडेय, अशोक कुमार, कश्मीर और कश्मीरी पंडित, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2020

(6) पांडेय, अशोक कुमार, कश्मीरनामा इतिहास और समकाल, राजकमल प्रकाशन, संस्करण : 2018

(7) पवार, जयश्री, कश्मीर समाज विस्थापन और समस्याएँ (शिगाफ़ उपन्यास के सन्दर्भ में), चिंतन प्रकाशन, कानपुर, 2018

(8) रॉय, डॉ. अजीत कुमार, गिरमिटिया मजदूरों का प्रवासन, कंट्री ऑफ़ ओरिजिन, 2015

(9) श्रीवास्तव, दिनेश चंद्र, भारतीय गिरमिटिया मजदूर और उनके वंशज, प्रभात प्रकाशन, 2018

(10) प्रियंवद, भारत विभाजन की अंत:कथा, पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2018

(11) अग्रवाल, प्रमिला, भारत विभाजन और हिंदी कथा साहित्यजयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,1992

(12) खां, डॉ.मोहम्मद फ़िरोज, मुस्लिम मानस और हिंदी उपन्यास, प्रथम संस्करण : 2013

(13) मिश्रा, डॉ.शुभ्रता, धारा 370 मुक्त कश्मीर यथार्थ से स्वपन की ओर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2015

(14) पांडेय, अचला, विस्थापन का साहित्यिक विमर्श, लोकभारती प्रकाशन, 2019

(15) अग्रवाल, रोहिणी, समकालीन कथा साहित्य : सरहदें और सरोकार, आधार प्रकाशन, पंचकूला हरियाणा, दूसरा संस्करण : 2012

पत्र-पत्रिकाएं

वाङमय

युद्धरत आम आदमी

हंस

दलित अस्मिता

आदिवासी

शब्दकोश

1 बृहत प्रमाणिक हिंदी कोश : संपादक आचार्य रामचंद्र वर्मा, लोक भारती प्रकाशन

2 मानक हिंदी शब्दकोश : संकलनकर्ता, कृष्णकांत दीक्षित

3 मानक सामान्य हिंदी : डॉ पृथ्वीराज पांडेय

Website – www.aadiwasivisthapan

www.kashmiripanditvisthapan